Title: VALLEY OF WEEPING
preached by Dr. w euGENE SCOTT, PhD. Stanford University
At the Los Angeles University Cathedral
Copyright © 2007, Pastor Melissa Scott - all rights reserved

शीर्षक : **विलाप की घाटी**
डॉ. डब्लयू. यूजीन स्काट, विशारध, स्टैनफोर्ड विश्व विध्यालय,
द्वारा लासऐंजलस के गिरजाघर में उपदेश दिया गया
अधिकार © २००७, पादरी मैलिसा स्काट - सारे अधिकार सुरक्षित

VALLEY OF WEEPING
विलाप की घाटी

जैसा की आप जानते हैं की मैं हर वर्ष ईस्टर के दिन को मिला कर, सात उपदेश देता हुँ। मैंने वह अपने पिता के अंतिम संसकार के समय उपदेस दिया था, इसलिये मैं ईस्टर के उपदेश से हट कर बाकी सात में से एक उपदेश देता हुँ। यह उपदेश, मेरे युवा दिनों में और मेरे प्रचार के दिनों में आत्मिक मार्गदर्शन की ज्योती रहा है - भजन संहिता ८४: "क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जो तुझ से शक्ति पाता है।"

"धन्य" शब्द के नीचे रेखा खेंचीये। आजकल के गिरजाघर उन आशिशों को जानते हैं जो समय पर मिल जाती हैं, परन्तु यहाँ पर यह इब्रानी शब्द का अर्थ है की वह आशीष जो कभी नहीं बदलती।

मैं इस वचन को पिछले ३० वर्षों से प्रचार करता आया हुँ। मैंने जब पहली बार इस पर प्रचार किया था, उससे बेहतर मैं प्रचार नहीं कर सकता। मैं हर वर्ष इस के बारे में प्रचार करना चाहता हुँ क्योंकि मैं अब तक उस स्थान पर नहीं पहुँचा हुँ। मुझे पता है की इब्रानी में क्या कहते हैं। यह आशीष की उस स्थिती को बताता है जो कभी नहीं बदलता। यह कभी कबार की बात नहीं है। यह "हमेशा ऐसा ही" है। मैं अभी वहाँ नहीं पहुँचा हुँ, परन्तु मैं जानता हुँ की वहाँ कैसे जाना है। इसलिये मैं यह उपदेश दे रहा हुँ। यह वह अशीष की की स्थिती है,जो हर कोई नहीं पाता - "धन्य है वह मनुष्य।" 'वह' शब्द उस व्यक्ती को दूसरे लोगों से अलग करता है। यह कोई वस्तु नहीं है जो स्वर्ग से छिडक दी जाती है। एक विशेष व्यक्ति को यह आशीष मिलती है। "क्यो ही धन्य है वह मनुष्य, जो तुझ से शक्ति पाता है, और वे जिनको सिय्योन की सडक की सुधी रहती है।"

वचन ६: "जाते हुए" यह बात साफ है की यह आशीष किसी से जुडी हुई है जो कहीं जा रहा है, एक बदलाव की क्रिया। मुझे कुछ स्थिती पसन्द नहीं। मैं बूडा होते जा रहा हुँ, इसलिये मुझे बदलाव पसन्द नहीं और ऐसी कोई बात नहीं बची जो परमेश्वर मुझे सिखाना चाहेगा, विशेष रूप से इस तरह की बातें।

जब मैं ३० का था, तब यह प्रचार करता था। मैं गिरजाघरों में सफेद बालों वाले लोंगों के बीच शक्ति और बल के साथ प्रचार करता था। मसीहत के बारे में एक बात जान लीजीये की - बैठने की जगाह नहीं है। कोई सिद्धि नहीं है, कोई प्राप्ति नहीं है, कोई ऐसी बात नहीं है जहाँ पहुँच कर आप आप विश्राम

करें और कहें, "उन अभागे लोगों को देखो, वे वहाँ आना चाहते हैं, जहाँ मैं हुँ।" मसीहत एक यात्रा है, कोई मंजिल नहीं - जब तक की हम वहां अपने अंतिम मंजिल पर नहीं पहुँच जाते। इसका अर्थ ये हुआ की बदलाव होता है।

पुराने नियम में एक राष्ट्र जिस के विषय में परमेश्वर अधिक संतुष्ट नहीं थे, वे कहते हैं, "वे अपनी मैल में विश्राम कर रहे हैं।" यह शब्द मय बनाने से लिया गया है जिस का अर्थ है "नीचे मैल का बैठ जाना।" वे आगे कहते हैं, "उन्हें एक बर्तन से दूसरे बर्तन में खाली नहीं किया गया है।" इस कारण उन का मैल उन में जमा हुआ है जिस कारण उन में से बदबू आ रही है। मय बनाते समय उस के एक बर्तन से दूसरे बर्तन में खाली किया जाता है ताकी मैल पीछे छूट जाये।

जब मैं जवान था तो मैं ऐसे ही रहता था। आप को बदलाव को स्विकार करना चाहिये। आज की सफलता इस में है की आप शैतान के आक्रमण के लिये तैयार रहें। और इस मसीही यात्रा में कोई ऐसा स्थान नहीं है की जहाँ पर आप पहुँच कर कहें की, "वाह, अब जब की मैंने अपना लक्षय पा लिया है और परमेश्वर को बता दिया है की मैं अच्छा हुँ, अब मैं यहाँ पर रुक कर परमेस्वर का इंतजार करता हुँ की वह आ कर मुझे घर ले जाये।" अब आप को जो मैंने कहा वह पसन्द नहीं आया है तो आप मेरे करीब नहीं हैं।

मैं अपने उपदेश के इस भाग को बहुत जल्दी पूरा करता था, क्योंकि मैं जवान था। परन्तु अब उपदेश के इस भाग से मैं नफरत करता हुँ। जो मुझे पन्द्राह वर्षों से सुनते आ रहे हैं वे जानते हैं की मैं इस भाग को कितनी जल्दी पूरा करता था। मैं डॉ. टोज्ज़र की बात कहना चाहूँगाः "मसीहत एक यात्रा है, मंजिल नहीं।" मैं बताऊँगा की कितनी मसीहत इस लक्षय की ओर बताती है : वेदी के पास आओ, रटा रटाया उपदेश दो; आप सुर्क्षित हैं, उन की पीठ थपथपाओ, और उन्हें बाहर भेज दो। हमेशा के लिये सुरक्षित। "आप जो चाहे करीये। आप कर चुके हैं। एक बार बीमे की रकम भरने के बाद, अन्नत जीवन का बीमा पत्र पा चुके हैं। अब यहाँ से भाग जाओ जब तक मैं दूसरे के लिये जगाह बनाता हुँ। आप मेरे बैल्ट पर खोपडी की तरह हैं।"

पैन्टिकोस्टल कुछ और आगे गये, और सैकंड डैफिनिट वर्क आफ ग्रेस पीपल और आगे गये और उन को दूसरा अनुभव मिला जो और बी लोगों ने पाया था, और जब आप ने पाया तो आप ने दूसरों को भी बुलाया की वे भी पायें; और जब आप पा चुके तो आप औरों से अच्छे निकले और आप के पास कुछ और पाने के लिये नहीं बचा। मैं आप को बता चुका हुँ की मैं जब युवा था तो मैं पैन्टिकोस्टल गिरजाघर जाता था, जहाँ सभाओं में जोना पडता था क्योंकि मेरे साथ के जो बच्चे थे वे "पा चुके" थे और वे फुटबाल खेल रहे थे; और मुझे ये लोग अभी भी तंम्बू की धूल में देने की कोशिश कर रहे थे। मैं परमेश्वर को उतना नहीं चाहता था जितना की इस बात को समाप्त करना चाहता था ताकी मैं भी जा कर फुटबाल खेल सकूँ।

मंजिल। जैसे की रेनहोल्ड नीबर ने कहा था, पेंटिकोस्तल के अनुभव और सैकंड डैफिनिट वर्क

आफ ग्रेस पीपल - जिन्हें नाज़रीन कहते हैं, और वे लोग जिन्होंने यह जाना है की प्रारंम्भ के बिंदू के बाद अनुभव है, इन की दुर्घटना यह थी की जिन अनुभवों को अधिक से अधिक पाप रहित होना चाहिये था, वे सब से दुष्टतम पाप का वाहन बन गये: आत्मिक घमण्ड। उन्होंने वहाँ डेरा डाल लिया और हर एक को बुलाने लगे।

कहीं रुकने की बात नहीं थी। इसलिये हम इस धार्मिक प्रचार सभा को नये रूप में प्रारंम्भ कर रहे हैं: सब तैयारी थी; सब प्रशिक्षण था; इस संसार को अपना प्रदेश बनाने की तैयारी हो रही थी। जब हम विश्वास में नया कदम बडाते हैं, तो हम जानते हैं की हम यहाँ पर यात्री हैं। हम एक यात्रा पर हैं और यह वचन कहता है की यह धन्य पुरुष, यह व्यक्ति जो झुण्ड से हट गया है, जिस के जीवन में आशीश है, जो उसे कभी छोड कर नहीं जाती, वह एक यात्रा पर है - लगातार बदलते हुए।

अगला वचन कहता है, "वे रोने (अंग्रेजी में बाका) की तराई में जाते हुए।" क्या आप जानते हैं की बाका का मतलब क्या होता है? बाका का अर्थ है "रोना।" मैं जो बता रहा था, यह उससे भी दुष्टतम है - न केवल लागातार बदलाव, यह जीवन जिस का है वह यात्रा पर है और इस बदलाव और इस यात्रा में ... (और इस १९९१ के ईस्टर पर जब हम एक और वर्ष का इंतजार कर रहे हैं), जिस यात्रा पर यह धन्य पुरुष जा रहा है, उस का कुछ भाग "रोने की तराई" से गुजरता है। हम कितनी बार इस छल में रहते हैं की मसीही जीवन में यदी आप परमेश्वर के साथ बने हुए हैं तो आप इन रोने की तराईयों में नहीं चलेंगे।

मेरी बाईबल कहती है की धन्य पुरुष, जब धन्यता की स्थिती में होता है - जिस में धन्यता की योग्यता में बदलाव नहीं आता, वे रोने की तराई से जाते हैं।

मैं उसी स्थिती में आ पहुँचा हुँ, जब मैं पिछले सप्ताह यशायाह में से प्रचार कर रहा था, "तुम में से कोन है जो यहोवा का भय मानता और उसके दास की बातें सुनता है, जो अन्धियारे में चलता हो और उसके पास ज्योती न हो?" मुझे इस धर्म से नफरत है जो यह छल पैदा करता है की जब आप रोने की तराई से जाते हैं तो इस का अर्थ यह है की आप ने परमेश्वर को छोड दिया है या परमेश्वर ने आप को छोड दिया है। यह यात्रा का एक भाग है। बीच सप्ताह से ले कर अब तक मैं निर्गमन से प्रचार कर रहा हुँ, जहाँ परमेश्वर उस पुराने नियम की कलीसीया को जंगल से ले कर जा रहा है... व्यवस्थाविवरण में यूँ लिखा है, "यह देखने के लिये की उन के मन में क्या है और उन्हें बताने के लिये।" इस सप्ताह हम उन्हें लाल समुद्र की जीत से ले कर चले हैं जहाँ परमेश्वर ने सब कुछ किया। उन्हें केवल इतना करना था, "शांत हो जाओ और परमेश्वर का उद्धार देखो।"

लाल समुद्र की जीत के बाद जहाँ उन्होंने कुछ नहीं किया... (मुझे याद नहीं की परमेश्वर कब मेरे साथ इतना अच्छा था)। "डरो मत" मूसा ने लोगों से कहा, "खडे खडे वह उद्धार का काम देखो, जो यहोवा आज तुम्होरे लिये करेगा।" उसने लाल समुद्र को दो भागों में किया और उन के दुश्मनों को मारा। आप ने मुझे खाडी युद के बारे में बताते हुए सुना है। मैनें सुना की सारे मसीही अपने दुश्मनों के लिये प्रार्थना कर रहे थे। मैं उन के लिये प्रार्थना नहीं कर रहा हुँ। मैं तो प्रार्थना कर रहा था की वे कुलहाडी से भी अधिक मरे हो जायें और मेरे पास बहुत अच्छी बाईबल है। मेरा यह मतलब है की पुराने नियम के

सारे सिद्ध पुरुष लाल समुद्र के किनारे खडे थे, जब फिरौन की सेना पत्थर की तरह डूब रही थी। परमेश्वर में भी रसीकता है। उस ने उन पर पानी छोडने से पहले उन के रथों के पईये खोल दिये। वे ऊपर नीचे गुलाटी खा रहे थे।

और परमेश्वर के लोग नाचने और गाने लगे: "देखो परमेश्वर ने हमारे लिये क्या किया। उसने फिरौन को पत्थर की तरह समुद्र में डुबो दिया।" फिर परमेश्वर उन्हें तीन दिनों तक जंगल में चलाता रहा जहाँ वे प्यासे हो गये और बक बक करने लगे, और वे मारा नामक एक स्थान पर पहुँचे, जहाँ का पानी खारा था। वे शूर जंगल से निकल कर एक आशीष की जगाह पर पहुँचे, फिर इस आशीष की जगाह से निकल कर वे एलीम पहुँचे जहाँ बारह सोते और सत्तर खजूर के पेड थे। वे फिर सीन नामक जंगल पहुँचे जहाँ पर उसने उन्हें खाने को मन्ना दिया और उन को एक सबक सिखाया की वह उन का प्रति दिन उन की आवश्यक्ता की वस्तुओं का देने वाला है।

तब वे सीनै पर्वत के पास आये, जिस का अर्थ है "पाप का परमेश्वर" जिस का यह भी अर्थ है की "चिकनी मिट्टि की जगाह का परमेश्वर," जहाँ पर उन्होंने सबक सीखे। संक्षिप्त में कहा जाये तो उन्होंने जंगल में परमेश्वर के मार्गों और उसकी दोने की सामर्थ्य के बारे में जाना। उनेहों ने उस जगाह पर अधिक नहीं साखा जब वे समुद्र के पास परमेश्वर की विजयता देख कर खुश हो रहे थे; उन्होंने एलीम के सोतों के पास भी अधिक नहीं साखा; उन्होंने उस समय भी अधिक नहीं साखा जब परमेश्वर सीनै पर्वत पर बात कर रहा था - और वे पर्वत के सोने के बछडे के चारों ओर नाँच कर जश्न मना रहे थे।

परेशानी के समय में ही पता चलता है की कौन सही में मसीही है और कौन नहीं है। और यह "विलाप की घाटी" "पाप का जंगल" की तरह है, और यदी हम आगे देखें तो वे "रपीदीम" नामक स्थान पर पहुँचे जिस का अर्थ है, "विश्राम का स्थान" परन्तु वहाँ पर केवल काँटों से भरे पेड, धूल और पत्थरों के अलावा कुछ भी न था....। इसलिये परमेश्वर का मार्ग हमारा मार्ग नहीं है। मैं केवल आप लोगों को यह बताना चाहता हुँ की जैसे की कई प्रचारक प्राच करते हैं की मसीहत का अरेथ यह है की आप को अच्छा जीवन और तुरन्त सफलता मिलेगी, तो ऐसा नहीं है, क्योंकी जो धन्य पुरुष है वह अपनी यात्रा विलाप की तराई से होते हुए करता है।

मुझे स्वंय को पिछले वर्ष इस बारे में याद दिलाना था। विलाप में अब बदलाव आ गया है। जब मैं धर्म प्रचारक के रूप में अठराह वर्षों तक, सारे संसार में घूम कर इस बारे में प्राचार कर रहा था, तो मुझे पता है की मैं किस तरह की तराईयों से होकर गुजरा हुँ। अब ये विलाप की तराईयाँ बिलकुल अलग हैं। ऐसा भी समय था जब मैं सोचता था की काश यह गिरजाघर न होता। ऐसा बी समय है जब परमेश्वर की आशीशों का भार और शक्ति हमें उन की योग्यताओं से अधिक मिलीं हैं, जिन्हें परमेश्वर ने हमारे कार्य को पूरा करने के लिये भेजा है, या कभी उन्की और मेरी शक्ति से बढ कर योग्यतायें मिलीं हैं - ऐसे में तराईयाँ बदल जाती हैं।

मसीही अनुभव का एक सच यह भी है की जब आप परमेश्वर के साथ आगे बडते हैं, तो ये लोग जो दूर दर्शन पर आप को देख कर हँसी उडाते हैं और ऐसा व्यतीत करते हैं जैसे की आसमान पर कोई

बादल नहीं है, वे या तो गंदगी से भरे हुए हैं और झूठ बोल रहे हैं या वे परमेश्वर को नहीं जानते। वे इस संसार के राजकुमार की सेवा कर रहे हैं। और क्योंकि परमेश्वर निर्दयी नहीं है, वह उन लोगों के पीछे नहीं पडता की वे बदलें। जो परमेश्वर के लोग हैं, शैतान उन्हीं को पकड ने की कोशिश करता है।

मैं अब तक विलाप की तराई से छुटकारा नहीं पा सका हुँ। मैं उन सामान्य परेशानीयों के बारे में नहीं कह रहा - मैंने अपने पिता का अभाव कई बार अनुभव किया है, और रोया भी हुँ। मैं इन आत्मिक कराईयों के विषय में बोल रहा हुँ जहाँ ऐसा लगता है जैसे आप ने विश्वास से कदम बढाया है, परन्तु परमेश्वर ने नहीं...। एक बात है जिस पर परमेश्वर दृढ हैः जब वह मुझे कुछ कार्य करने के लिये प्रतोसाहित कर लेता है, तो वह हर समय कहीं चला जाता है।

क्या कभी आप ने ऐसा अनुभव किया है? मैं परमेश्वर पर निर्भर होना छोड देता हुँ और कहता हुँ, "ओह" - मैं परमेश्वर के साथ बहुत सपाई से बात करता हुँ - "यह लो! आप ने मुझे एक और मुसीबत में खडा कर दिया! आप मुझे इस परेशानी में ले कर आये हो। आप ही ले कर आये हो। अलविदा" - औप वह मुझे अकेला नहीं छोडता।

मैं एक सोच पर पहुँचा हुँ। मैं यह गंदगी छोड रहा हुँ। यह परमेश्वर को मुबारक हो" - और वह मेरा रुमाल ले कर मेरा पीछ करेगा और दिन भर मुझे परमेशान करेगा - हर पल। कभी असफल नहीं होता। परन्तु वही दृढता के साथ, वह स्वंय को मेरे सामने सच साबित करेगा। मैं कहूँगा, "इस विशवास के मार्ग में कुछ तो है। मैं इसे अपनाना चाहता हुँ। आईये, हम परमेश्वर को अपनाने चलें।" फिर वह छुट्टि मनाने चला जाता - हर बार। इसे कभी असफल होते नहीं देखा। मैं इस तरह की विलाप की तराईयों के बारे में कह रहा हुँ। "परमेश्वर आप कहाँ हैं? आप मुझे एक और गडबडी में ले कर आ गये।"

इस से अधिक और कुछ नहीं है..., मैं आप को पहले भी बता चुका हुँ की परमेश्वर सिखा सकता है। मैं जानता हुँ की आज मैं क्या प्रचार कर रहा हुँ... मुझे इसे हर वर्ष सीखना क्यों पडता है? आप समझेंगे की सब ठीक है और अचानक कहीं से कुछ ऐसा आ जोता है जो सब कुछ छितरा के रख देता है। और कियी पुराने सेना के जवान की तरह जो कई बार लडाई पर जा चुका है, मैं इसे इतनी आसानी से नहीं ले सकता। मैंने जब यह लडाई नये मसीही की तरह प्रारंम्भ किरी तो बहुत अच्छा लगता था। मुझे यह नहीं पता था की शैतान इतना बलवान है। मैं ऐसे निर्बुद्धि के गीत गाया करता था, " शैतान का नाम अपने जूते के तलवे पर लिखो और उल के ऊपर चलो।" मैं यह कह सकता हुँ की वे निन्जा टर्टलस से भी बलवान हैं।

मुझे परमेश्वर के सारे वादे पता थे, और मैं प्रचारकों को सुनता था जो आप को बताते समय उन की आँखों में चमक आ जाती थीः "शैतान आप के कदमों के नीचे है! शैतान आप के नीचे है और परमेश्वर उस पर जयवन्त हुआ है और "जो तुम में है वह उस से महान है जो इस संसार में है।" और मैं कहता "यह सच है" और शैतान मुझे ७५ फीट से गिरा देता। और मैं उठ खडा होता और कहता, "लडाई तो अब शुरी होगी।"

मैं शैतान से बचने के लिये पेड के चारों तरफ चलने लगा। मैं लडाई से डरता हुँ; मैं उससे थक गया हुँ। मुझे और विलाप की तराईयाँ नहीं चाहिये। मैंने परमेश्वर से यह सब पूरे वर्ष कहता आया हुँ और उसने कहा, "मैं मालिक हुँ! तराईयाँ, यात्रा का भाग हैं।" मैं नहीं चाहता की इस वर्ष आप चकित हो जायें। सिद्ध पुरुष खुश हो जाओ! यह और भी बुरा होने वाला है। मैं आप से कहता हुँ, जब शैतान पायेगा... जब मैं अंत में उठ खडा होऊँगा, तब लडने के लिये और भी अधिक बातें हैं।

यह कलीसीया केवल मूक बन कर खडी नहीं रहेगी। और मैं सेवानिवरित नहीं लेने वाला, और शैतान की योग्यता और उस के हथीयारों का मैं बहुत आदर करता हुँ। जो उस प्रचारक ने कहा, मैं उसको बिना उतने बल लगाये कहूँगा, "जो हमारे अंदर है, वह उससे महान है जो संसार में है।" अब मुझे पता है की अब जब हम इस वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं, तो मुझे बाईबल को निकाल कर वह करना है जो मैं आज कर रहा हुँ। और मैं यह कहना चाहूँगा की गुप्त पाँच अब सच में बदल गये हैं। जब हम "हवा की शक्ति के राजकुमार" के क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं और वह करें जिस की हमरे पास क्षमता है। (यह संसार का सब से महान और सब से शक्तिशाली रेडीयो जाल है)। मैं अपेक्षा करता हुँ की शैतान भी तैयार रहेगा, क्योंकि हम सच में उसके क्षेत्र में प्रवेश करने जा रहे हैं। और मैं भी तैयार रहना चाहता हुँ - कलीसीया के लिये ... मेरे लिये ... और मैं चाहता हुँ की आप भी विलाप की तराईयों के लिये तैयार रहें जो आने वाली हैं। मैं चाहता हुँ की आप में से हर एक व्यक्ति इस बात के लिये तैयार रहे - विलाप की तराईयाँ अपनी यात्रा का एक भाग है। आप इसलिये पीछे नहीं हटेंगे की तराईयाँ हैं।

मैं जब भी यह उपदेस देता हुँ तो दो बातें कहना चाहता हुँ। "कारण" उतना मुख्य नहीं है। जब आप तराई में प्रवेश करते हैं तो शैतान है जो कहता है की "क्यूँ"। यदी आप ने कोई गलती करी है और आप इस के लिये जिम्मेदार हैं, तो शैतान आप को मारते देख बहुत खुश होता है। वह एक कंदेह पर बैठ कर कहेगा, "मर्द बनो। तुम दोषी हो - तुम जानते हो की तुम ने क्या किया है; अब भुगतो।" जब शैतान आप से इस तरह कहे तो मैं चाहूँगा की यीशु के नाम में उसे यह जवाब दो, "हट जाओ! हट जाओ!"

आप बाईबल में से यह वचन ले सकते हैं और वाक्यों पर चित्र बना सकते हैं। वहाँ एक भी शब्द ऐसा नहीं है जो "कारण" के बारे में कहे। इस के लिये आप जिम्मेदार हैं या नहीं यह बात कोई मायने नहीं रखती। "धन्य पुरुष" मैं चाहता हुँ की आप अगले शब्द के नीचे रेखा खेंचें, "रोने की तराईयों से जाते हैं।" आप अपनी बुद्धि से अपने आप को मार सकते हैं - उस पर डेरा डाल कर घर बसा सकते हैं। इस आयत में कहीं पर भी ऐसा शब्द नहीं है जो "कारण" कारण को बताये। केवल यही की "धन्य पुरुष इस से हो कर जाते हैं।"

यदी आप अपनी गलतीयो के लिये अपने आप पर दोष लगाते हैं, तो इस को क्रूस पर छोड दीजीये। मसीह इसलिये मरा की हमारे पाप ढापें जायें। आप केवल परमेश्वर से इस के बारे में सच्चे रहें, और किया से नहीं - और उस से भी केवल एक बार। यह कोई मायने नहीं रखता की आज आप अपनी "गलतीयों" की तराई में हैं, आज आप के लिये मेरा उपदेश यह है की "धन्य पुरुष इस से हो कर जाते

हैं।" कारण कोई मायने नहीं रखता। अपने आप पर दोष लगाना छोड दीजीये। आप इतिहास को फिर से नहीं लिख सकते। यह परमेश्वर के अनुग्रह की अच्छाई है। उस पर छोड दें। "मैं दोषी नहीं हुँ।"

या इस के विपरीतः "मेरे साथ जो हो रहा है, उसका कोई कोरण नहीं है। मैं विश्वासनीय हुँ। मैंने जितना अच्छा हो सकता था किया है और सारा संसार मुझ पर थोप दिया गया है।" शैतान दोष लगाने वाले कंदेह से हट कर सहानूभूती के कंदेह पर कूद जायेगा। उसे ऐसा करना बहुत अच्छा लगता है। "यह सही है। मैं ऐसे परमेश्वर की उपासना नहीं करूँगा जो तुम्हारे साथ इस तरह का व्यवहार करे या तुम्हारे साथ ऐसा होने दे। किसी भी बात के लिये तुम दोषी नहीं हो।" जब ऐसा हो तो आप कहें, "चुप हो जाओ।" इसलिये क्योंकि यह सब कुछ मायने नहीं रखता। यदी आप निरदोष हों तो भी कोई बात नहीं। रोने की तराईयाँ अपनी यात्रा का भाग है, परन्तु धन्य मनुष्य इस से हो कर जाता है। सहानूभूती आप को मार देगी। "उदासी, निराशा और पीडा मुझ पर हो!" आप की तराई में डेरा डालना बंद हो।

मैं उस धर्म के बारे में प्रचार कर रहा हुँ जो बडा हो चुका है। विलाप की तराईयाँ अपनी यात्रा का एक भाग है। "बरसात की बूँदें अच्छे और बुरे दोनों पर एक समान गिरती हैं।" परन्तु धन्य पुरुष इन तराईयों में से हो कर जाते हैं। वे न केवल इस में से हो कर जाते हैं - मैं यहाँ पर एक बात बताना चाहता हुँः इस आयत में तराई की लंम्बाई को बारे में कुछ नहीं बताया गया है। आप इसे एक कदम में पार कर सकते हैं या आप को इसे पार करने में बहुत समय लग सकता है। वचन यह नहीं कहताः "धन्य मनुष्य तराईयों से हो कर जाते समय यह नहीं सोचते की यह उन्हें मार सकती हैं।" केवल परमेश्वर का वादा की "तमु इसे पार कर सकते हो।" यह कोई कल्पना भूमी वाला धर्म नहीं है, जिस में जो सच होता है वह सच में सच नहीं होता। आप की तराई उतनी ही बुरी है जितना आप को लग रहा है परन्तु यह कोई मायने नहीं रखता की आप दोषी हैं या नहीं - "धन्य मनुष्य तराईयों से हो कर जाते हैं।"

"मैं बाहर आ रहा हुँ; यह आज हो सकता है!" - इस बात को आसान न लें। "धन्य मनुष्य तराईयों से हो कर जाते हैं।"

अधिकतर मेरा जीवन अच्छा हो रहा है। "क्या ही धन्य है वह मनुष्य ... रोने की तराईयों से हो कर जाते हुए" - या "विलाप" "उसे सोते में बदल देता है।" मौलिक बताती हैः वे उसे सोतों का स्थान बनाते हैं।" क्या आप नहीं समझते की हम आशा की सडक की तराई में बैठे थे? और सब से बदतर तराई उन से मिलती है जो मसीही भाई होते हैं। परन्तु हम इन "सोतों के स्थान" तक इस कारण पहुँच पाये क्योंकि हम ने "ना" नहीं कहा।

हम ने परिस्थितीयों को अंतिम जवाब नहीं समझा। धन्य मनुष्य अपनी तराई में नहीं मरते। इस वचन के धन्य मनुष्य का लक्ष्य केवल उसे पार करना नहीं है - इस तरह का मनुष्य तराईयों को बदल देता है। वे उन्हें "सोतों के स्थान" में बदलने का अवसर खोजते हैं। कई बार ऐसा हुआ है... जब मैं बहुत यात्रा करता था - कम से कम एक रात या एक शाम को, अपनी प्रचार सभा के दौरान, मैं पादरी के साथ

अस्पचाल जाया करता था। मुझे ऐसे अनुभव मिलें है की मैं लोगों के अंतिम समय में उन से मिलने जाता था और उन से आशीश पा कर निकल कर आता था। उस तराई को जो दूसरे लोगों को दबा देती है - और यही सच्ची मसीहत है, आप उसे "सोतों के स्थान" में बदल दें जब तक उस तराई में से आशीश के अधिक अवकास नहीं निकलने लगते।

अब सवाल यह है की धन्य मनुष्य रोने की तराईयों में से कैसे हो कर जाते हैं - वे उस में से हो कर जाते हैं; उन्हें सोतों के स्थान में बदल देते हैं। कैसे? पहली आयत को पढीये, "क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जो तुझ से शक्ति पाता है".... वह क्या कहती है? "तुझ में।" यही सिद्धांत है! यही सिद्धांत है! "क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जो तुझ से शक्ति पाता है" यीशु ने यह कभी नहीं कहा की हम तराईयों में से नहीं जायेंगे। उस ने कहा की संसार में क्लेश होंगे। उसने कहा की उन तराईयों में वह हमारे साथ रहेगा - वह हमें कबी नहीं छोडेगा, कभी नहीं त्यागेगा। यीशु केवल पहाडी की चोटीयों का प्रभु नहीं है। परमेश्वर का यह वचन है की यदी हम विश्वास के साथ अपना हाथ उसके हाथ में सौंप देते हैं, तो वह हमें कभी नहीं छोडता।

पिछले रविवार को यही उपदेश थाः "जब रौशनी में आप ने सीखा है तो अंधकार में शक मत करीये।" आप परमेश्वर को न देख सकें। वह आप को देख सकता है। यकीनन, "जिस से परमेश्वर प्यार करता है उसे प्रशिक्षण देता है।" यह इब्रानियों है। यकीनन, "कई तरह के क्लेश हैं," पतरस ने कहा पर वह यूनानी शब्द का प्रयोग करता है, "कई आशीशें।" "परमेश्वर हमें अपनी सहन शक्ति की क्षमता से अधिक नहीं परखता, परन्तु परिक्षा से बचने की राह दिखाता है।" यूनान में बचने की राह को एकाकी में बदल दिया गया है, जैसा की मैंने पिछले रविवार को आप को बताया था, जैसे की परिक्षण। "क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जो तुझ से शक्ति पाता है"

एलिय्याह को परमेश्वर ने बुलाया - उसे करीत नामक नाले के पास बुलाया, कौवों को आज्ञा दी की वे उसे खिलायें, परन्तु पुस्तक हमें बताती है की कुछ समय बाद वह नाला सूख गया। एफ. बी. मेयर कहते हैं की परमेश्वर एलिय्याह को उपहार देने वाले पर विश्वास करना सिखा रहा था, बजाय इस के की वह ुन उपहारों पर विश्वास करे जो उस ने उसे दिये थे। परमेश्वर हमें एक बर्तन से निकाल कर दूसरे बर्तन में डालता है। ये विलाप की तराईयों को इसलिये बनाया गया की हम परमेश्वर पर विश्वास करना सीखें। वह हमारे साथ है, और यदी हमारी शक्ति उस में है, तो मुजे पता है की मैं परमेश्वर के सात चल रहा हुँ और तराई कोई मायने नहीं रखती। "क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जो तुझ से शक्ति पाता है, और वे जिनको सिय्योन की सडक की सुधि रहती है।" कितनो की बाईबल में यह झुके हुए अक्षर में लिखा हुआ है? अपने हाथ ऊपर उठाईये। झुके हुए शब्दों का अर्थ यह है की इसे अनुवाद करने वालों ने इन अक्षरों में लिखा है। मौलिक रूप में "आप" कहा गया है। "क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जो तुझ से शक्ति पाता है, और वे जिनको सिय्योन की सडक की सुधि रहती है।" "जिनको" शबाद को काट दीजीये और "आप के रास्ते" लिख लीजीये।

परमेश्वर न केवल हम में रुची लेता है और हम पर नजर रखता है और हमें तराई से लेकर जाता है, बरन वह चाहता है की हम उसके रास्तों को पहचानें। हम उसके साथ सर्वदा राज करेंगे और वह चाहता है की हम उसके मार्गों को पहचानें। जंगल में चालिस वर्षों तक रहने के बाद, परमेश्वर ने शोक किया की इस्राएलीयों ने केवल उसके कार्यों को देखा; केवल मूसा ने उसके रास्तों को जाना। आप में से कितने यह कह सकते हैं की इन पन्द्राह वर्षों में आप परमेश्वर के मार्गों को जान पाये हैं? जितना अधिक आप उसको देखते हैं।

मैं आप पर एक कोशिश करता हुँ। आप में से कितने यह जानते हैं की बजाय उस समय के की जब आप ने प्रारंम्भ किया था, वह आप से इस समय अधिक अपेक्षा करता है? आप परमेश्वर के मार्गों को पहचान रहे हैं। आप में से यह कितने जानते हैं की अब उस को यह बता कर रोकना की हम उसके लिये कितना बलिदान कर रहे हैं, बताना आसान नहीं है? आप उसके मार्गों को जान रहे हैं। वह आप को घर ले जा रहा है, समयोचित योद्धा। वह व्यक्ति जिस की शक्ति परमेश्वर के ज्ञान में है, और जिस की उपस्थिती आप के साथ है, और परमेश्वर के मार्ग, वह विलाप की तराई में टूटता नहीं।

अब मैं अंत करता हूँ। आयत ११: "क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य और ढाल है।" यह उसके मार्गों का एक भाग है; "क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य और ढाल है।" यही वह हमें सिखाना चाहता है। इस विश्व में सूर्य का क्या कार्य है? सब कुछ उसके चारों ओर घूमता है। वह विश्व के तत्वों के मार्गों को नियंत्रण में रखता है। प्राचीन काल के अज्ञानी लोग समझते थे की सूर्य इन सब के चारों ओर घूमता है। सूर्य नियंत्रण में रखता है; सूर्य जीवन देता है; सूर्य ज्योती, गर्मी, अनाज, देता है। इस के बिना आप उन्नती नहीं कर सकते, मेरे मित्र। धन्य पुरुष, इसी बात को पहचानता है: परमेश्वर सर्वस्व है।

मैं यह कहना चाहूँगा: मुझे तराईयाँ पसन्द नहीं है, परन्तु मैं थोडा... मैं अभी भी कुछ विषयों पर परमेश्वर से कुछ विषयों पर बातें करता हुँ, परन्तु अधिक नहीं। मैं विश्वास करता हुँ की मैं, उस पादरी से, जो पन्द्राह वर्ष पहले यहाँ आया था, परमेश्वर के नियंत्रण में उससे अधिक हुँ। मैं जानता हुँ की मुझे रहना भी चाहिये। चलते हुए हम यही तो सीखते हैं। मुझे तराईयों से होकर जोना पसन्द नहीं, परन्तु इन से मैंने वह सब बातें सीखीं हैं जो जीत मुझे नहीं सिखा सकी। मसीही, विश्वास करना सीखते हैं और "पुत्र" को राज करने देते हैं।

ढाल। यह सब से कठिन बात है जिस को मैं अनुभवी रूप मैं मान सकता हुँ: परमेश्वर कुछ ऐसा नहीं होने देता जो उसकी योजना में न हो। सेनाओं का प्रभु होने के कारण वह शैतान को अपने नियंत्रण में रखता है। उसकी उपस्थिती में अभी भी शैतान काँपते हैं और, जैसे की अय्यूब पर से परमेश्वर ने ढाल को उठा लिया था, पिछले वर्ष में जो भी आप के साथ हुआ है, जो भी होने जा रहा है, हर विलाप की तराई जिस से आप होते हुए आप चलेंगे, परमेश्वर जो एक ढाल है - हमें अपनी समझ से सिखाना चाहता है, इसलिये इन सब बातों को होने देता है। विलाप की तराई को झेलने की क्षमता बढजाती है जब आप यह जान लेते हैं की आप परमेश्वर के ग्रहपथ पर हैं; और वह एक ढाल की तरह उस बात को नहीं होने देता जो आप नहीं झेल पाते।

गिनती ३। "यहोवा अनुग्रह करेगा और महिमा देगा।" तराईयाँ आती हैं परन्तु उन के साथ अतुलनिय अनुग्रह भी आता है। मैंने सुना है ... मैं इस से हमेशा प्रसन्न होता था, सारे संसार की कलीसीया में जब कोई प्रचारक बीच मंच पर होता था और वह सारी महिमा पा चुका होता था तो कैसे वे खुशी से कहते थे, "परमेश्वर अपनी महिमा किसी के साथ नहीं बाँचना चाहता" वे वहाँ खडे होकर परमेश्वर से कहते हैं की वह क्या नहीं कर सकता। यहाँ पर मेरी बाईबल कहती है की परमेश्वर महिमा देगा। "परमेश्वर अनुग्रह करेगा" - अतुलनीय अनुग्रह, "और महिमा।" वह बात जो परमेश्वर नहीं बाँट सकते वह उसके अनुग्रह को टुकराना है। परन्तु वह महिमा देगा - और आशीश बी देगा; वह आदर भी करेगा। विलाप की तराईयाँ हैं परन्तु यह पूरी यात्रा नहीं है - इन में से होते हुए चलीये। परमेश्वर अनुग्रह करेगा और महिमा देगा।

अंत में मैं चाहूँगा की आप ८वीं आयत देखें: "हे सेनाओं के परमेश्वर।" आप जानते हैं न की इस नाम का क्या अर्थ है? मैंने परमेश्वर के नामों के बारे में पिछले रविवार को प्रचार किया था। यह नाम सब कुछ नियंत्रण करने की उन की योग्यता को बताता है। मैं शैतान और उसके भीतों के बारे में बता चुका हुँ, परमेश्वर भी बतायेंगे...। बाईबल में कई अवसर हैं, जैसे दबोरा और बाराक की लडाई, जहाँ पर परमेश्वर ने ने लडाई के लिये सितारों को भी बुलाया। उसने फिरौन की सेना को लाल समुद्र में निगल लिया। सेनाओं का परमेश्वर होने के नाते वह प्राणहीन वस्तुओं को भी नियंत्रण में रखता है। वह विश्व को नियंत्रण में रखता है। वह आलौकिक जीवों, दोनों दूतों और शैतानों, को नियंत्रण में रखता है। वह मूर्तिपूजक देशों और राज्यों को नियंत्रण में रखता है और निशचित समय पर उन पर कार्य करता है।

"सेनाओं का परमेश्वर" का यही अर्थ है। इस का अर्थ यह है की आप के या मेरे पास चाहे जो भी समस्या हो, उसके पास उन से निबटने का रास्ता है। "हे सेनाओं के परमेश्वर, हे सेनाओं के परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन, हे याकूब के परमेश्वर, कान लगा। सेला" - या "उसके बारे में सोचो।"

यदी आप जल्दबाजी में ८वीं आयत को पढें तो आप को कुछ भी विशेष बात नहीं लगेगी, परन्तु जब यह भजन लिखा गया, याकूब को मरे बहुत लंम्बा समय हो चुका था। रात भर दूत के साथ लडे याकूब को लंम्बा समय हो गया था और याकूब - जिस का अर्थ है "एडी पकडने वाला" हमेशा अपने लिये कुछ छीन लेना या अपना ही ध्यान देना - उपेक्षक, स्वार्थि याकूब का नाम बहुत पहले परमेश्वर ने बदल कर "इस्राएल" रख दिया था जिस का अर्थ है 'वह राजकुमार जिस की शक्ति परमेश्वर में है.' इस आयत में परमेश्वर भजन के लेखक के द्वारा कुछ विशेष कहना चाह रहा है उन लोगों के लिये जो विलाप की तराईयों में लडखडा जाते हैं; की हमें हर वर्ष नये रूप से परमेश्वर पर विश्वास करना सीखना है; और इस कार्य में उसके मार्गों को जानना, जो परमेश्वर को पुकारते हैं की वह अपनी शक्ति से हमारी समस्याओं को दूर करे। इस तरह सेनाओं के परमेश्वर का यह नाम पडा।

आप जानते हैं की समस्या थोडी सी वित्तसंम्बंधी या बिमारी की, या मेरी बेटी या मेरे बेटे या खडाई में मेरे प्रियजन के बारे में हो सकती है, और हम चिल्लाते हैं, "सेनाओं के परमेश्वर, मेरी विलाप

की खाडी में क्या आप - जो सब कुछ झेल सकता है, क्या आप मेरे और मेरी समस्या के विषय थोडी चिन्ता करेंगे?" वह यह नहीं कहते की, "सेनाओं के परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुनः इस्राएल के परमेश्वर कान लगा।" यदी वहाँ पर यह लिखा होता की, "हे इस्राएल के परमेश्वर" - और मैं फिर से कहना चाहूँगा की योकूब ने अपने स्वभाव को बहुत पहले बदल डाला था और अपना नाम बदल डाला था। वह "इस्राएल" बन कर मरा "याकूब" नहीं। यदी वह पर यह लिखा होता, "कान लगा, हे सेनाओं के परमेश्वर, हे इस्राएल के परमेश्वर," तो मैं कहता की "इस से पहले की परमेश्वर मेरी सुने, मुझे अपने में बहुत बदलाव लाना है!" परन्तु वहाँ लिखा है, "हे सेनाओं के परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुनः हे याकूब के परमेश्वर" - वह उपेक्षक, छीनने वाला कीडा जिस का नाम याकूब रखा गया क्योंकि वह गर्भ से स्वार्थी रूप में निकला था।

परमेश्वर उन से क्या कहना चाहता है, आप से और मुझ से, जो विलाप की तराईयों में जाने वाले हैं या तराईयों में हैं? "उपस्थित हैः सेनाओं का परमेश्वर। प्राप्त करने वालाः हम में से कोई भी - क्योंकी सेनाओं का परमेश्वर याकूब का भी परमेश्वर है। मुझे बाईबल की एक बात बहुत अच्छी लगती है - यदी हर व्यक्ति जिस के साथ परमेश्वर कार्य करता था वह यशायाह की तरह पूर्ण होते तो, मैं अकेला रह जाता। परन्तु सेनाओं का परमेश्वर याकूब का भी परमेश्वर है - पापी..., लडखडाता..., उपेक्षक..., स्वार्थि...। फिर भी याकूब धन्य पुरुष है जो विलाप की तराई से जाते हुए पलट कर परमेश्वर की ओर मुडता है और उसे उसकी शक्ति के लिये पुकारता है।

मैं पीछे मुड कर बीते कई बर्षों की ओर देखता हुँ जब परमेश्वर मेरी अगुवाई करता था। वह मेरे हृदय को जानता है; वह मेरी कमजोरीयों को जानता है; वह मुझे सब से अच्छि तरह जानता है। और वह जानता है की जब मैं उदास हूँ तो मुझे उस की आवश्यक्ता है और मैं उन्हें सब से अधिक सनतुष्ट करना चाहता हुँ। और जैसे की वह मेरे मार्गों को जानता है, वैसे ही मैं भी उसके मार्गों को जानता हुँ। और आज इस्टर के दिन मैं बहुत गौरव अनुभव कर रहा हुँ की मुझे जीवते परमेश्वर के बारे में प्रचार कर का अवसर मिला है जो की सेनाओं का परमेश्वर है; उन के लिये जो चाहते हैं की परमेश्वर को अपने जीवन पर राज करने देते हैं; जो उसकी इच्छा चाहते हैं और उसके मार्ग चाहते हैं; जो विलाप की तराईयों में अपने हाथ उन की ओर उठाते, मैं दौहराता हुँ - वह कभी नहीं छोडेगा। हमारी शक्ति उस में है क्योंकि वह हमारे साथ है।

वह सेनाओं का परमेश्वर है, परन्तु वह योकूब का भी परमेश्वर है। वह उन तराईयों में हमारा हाथ उस तरह पकडता है जैसे की एक पिता अपने बच्चे को पकडने के लिये झुकता है जो की अभी मिट्टी है जिसे यही तरह बनाना है। परन्तु पिता उस की देखभाल करता है।

सेनाओं का परमेश्वर जो हमारी प्रार्थना सुनता है वह याकूब का भी परमेश्वर है। वह आप को सुने इस के लिये आप को पोप बनने की आवश्यक्ता नहीं। आप चाहे जो भी हों, चाहे जैसी भी परेशानी में क्यों न हों, परमेश्वर - सेनाओं का परमेश्वर आप की समस्याओं से बड कर है; और क्योंकी वह याकूब का परमेश्वर है, वह झुक कर आप का हाथ पकड कर आप को राह दिखाने के लिये तैयार है।

अधिकार © २००७, पादरी मैलिसा स्काट - सारे अधिकार सुरक्षित
Copyright © 2007, Pastor Melissa Scott - all rights reserved